www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-2* *Issue-1* *January 2025*

क्षमा शर्मा की बाल कहानियों में राष्ट्रीय चेतना

विकास कुमार

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, गुरुकुल काँगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार

सारांश–

क्षमा शर्मा हिन्दी बाल साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाकार हैं, जिनकी कहानियों में भारतीय संस्कृति, जीवन–मूल्यों और नैतिक चेतना का सशक्त प्रतिबिम्ब मिलता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में उनकी बाल कहानियों के माध्यम से भारत राष्ट्र एवं भारतीय सांस्कृतिक अनुराग के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उनकी कहानियाँ केवल मनोरंजन नहीं करतीं, बल्कि बाल पाठकों में राष्ट्र, परिवार, समाज, परंपरा, सहिष्णुता, सहयोग, करुणा, सत्य एवं कर्तव्य–बोध जैसी मानवीय संवेदनाओं को गहराई से स्थापित करती हैं। परिवार व रिश्तों की घनिष्ठता, लोकजीवन एवं त्योहारों की आनंदमयी छवि, प्रकृति एवं समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना तथा भारतीय जीवन–दृष्टि का संतुलित प्रस्तुतीकरण उनकी रचनात्मकता को विशिष्ट बनाता है। उनकी भाषा–शैली सरल, सरस और बाल–मन के अनुरूप है, जिससे सांस्कृतिक मूल्यों का संप्रेषण स्वाभाविक रूप से संभव होता है। निष्कर्षतः क्षमा शर्मा की बाल कहानियाँ राष्ट्र एवं संस्कृति के संवाहक के रूप में प्रभावी भूमिका निभाती हैं और समकालीन बाल साहित्य में राष्ट्रीय पहचान एवं सांस्कृतिक चेतना के निर्माण की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती हैं।

कुंजी शब्द– क्षमा शर्मा, बाल कहानी, पारिवारिक संबंध, लोकाचार, त्यौहार, परंपरा, भारतीय संस्कृति,

प्रस्तावना–

बाल साहित्य का मूल उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं बल्कि बालक के भीतर आदर्श जीवन मूल्यों का संचार करना है। इन्हीं मूल्यों में राष्ट्रप्रेम एक प्रमुख तत्त्व के रूप में उभरता है। राष्ट्रप्रेम वह भावना है जो बालक को अपने देश, समाज और संस्कृति के प्रति निष्ठावान बनाती है। बाल साहित्य में यह भावना किसी बाह्य उपदेश से नहीं बल्कि कथा के पात्रों, घटनाओं और प्रसंगों के माध्यम से स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती है। "बालक के भीतर देशप्रेम का बीज तभी अंकुरित होता है जब वह कहानी के माध्यम से यह अनुभव करता है कि अपने देश की सेवा करना और उसके हित के लिए कार्य करना गौरव की बात है। इसलिए बाल साहित्यकार बालक को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि देशप्रेम केवल नारेबाज़ी या भावनात्मक आवेग नहीं बल्कि कर्तव्य, अनुशासन, निष्ठा और सेवा भावना से जुड़ा हुआ आचरण है।"

बाल साहित्य में प्रस्तुत राष्ट्रप्रेम बालक को अपने परिवेश से जोड़ता है। विद्यालय, परिवार, समाज, प्रकृति और देश इन सभी के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करना राष्ट्रप्रेम का ही रूप है। यह भावना बालक में न केवल राष्ट्रीय एकता का भाव जगाती है बल्कि मानवता और सहयोग की भावना को भी सुदृढ़ करती है। इसीलिए कहा गया है कि "बाल साहित्य में देशभक्ति का अर्थ है अपने देश के प्रति प्रेम के साथ–साथ विश्व के प्रति सद्भाव का निर्माण करना"। बाल साहित्यकारों का मानना है कि राष्ट्रप्रेम की भावना बालक के आचरण में तब दिखाई देती है जब वह अपने दैनिक जीवन में अनुशासन, ईमानदारी, स्वच्छता और परिश्रम जैसे मूल्यों को अपनाता है। यही मूल्य आगे चलकर नागरिक उत्तरदायित्व और देश की प्रगति के आधार बनते हैं। राष्ट्रप्रेम की यह भावना बाल साहित्य में केवल भावनात्मक स्तर तक सीमित नहीं रहती बल्कि बालक के नैतिक और सामाजिक विकास

से जुड़ जाती है। इसीलिए कहा गया है कि "बाल साहित्य में राष्ट्रप्रेम का उद्देश्य भावनात्मक उत्तेजना नहीं बल्कि नैतिक और नागरिक चेतना का विकास है"।

बालक जब अपने आस–पास के समाज, पर्यावरण और राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति आदर का भाव रखता है तभी वह सच्चे अर्थों में देशभक्त कहलाता है। अतः बाल साहित्य में राष्ट्रप्रेम की भावना का तात्पर्य है बालक को ऐसे संस्कार देना जिससे वह अपने कर्म, व्यवहार और सोच से देश की प्रगति में योगदान दे सके।

क्षमा शर्मा की बाल कहानियों में राष्ट्रीय चेतना का स्वर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। वे बालक के मन में देशप्रेम, आदर्शों के प्रति निष्ठा और अपने गौरवशाली अतीत के प्रति सम्मान की भावना जगाने का प्रयत्न करती हैं। उनकी कहानियाँ केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं बल्कि उनमें राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक मूल्यों का गहरा संदेश भी निहित है।

क्षमा शर्मा की कहानियों में राष्ट्र प्रेम की भावना

क्षमा शर्मा बालक के हृदय में राष्ट्र के प्रति प्रेम और समर्पण की भावना उत्पन्न करने का कार्य करती हैं। उनकी कहानियों में पात्र अपने छोटे–छोटे कार्यों के माध्यम से देश के प्रति दायित्वबोध प्रकट करते हैं। बच्चों को यह संदेश दिया जाता है कि सच्चा देशप्रेम केवल शब्दों में नहीं बल्कि कर्मों में झलकता है। देश की प्रगति में योगदान देना, स्वच्छता, ईमानदारी, अनुशासन और सहयोग जैसे गुणों को अपनाना ही राष्ट्रसेवा का वास्तविक रूप है।

'जादूगर' कहानी में राष्ट्रप्रेम की भावना का सुन्दर वर्णन देखने को मिलता है। अपने देश की जमीन पर गोरे राजा द्वारा किया जा रहा कब्जा जादूगर को पसन्द नहीं आया। वह एक दिन एक बूढ़े से मिला। सब लोग उसे पागल बाबा के नाम से जानते थे। बूढ़ा कुलशील जादूगर को अपनी झोपड़ी में ले गया। जो कुछ भी रूखा–सूखा खाने को था उसे खिलाकर बूढ़े ने कुलशील का आतिथ्य किया। कुलशील ने अपने मन के बहुत–से सवाल बूढ़े के सामने रखे। बूढ़े ने बताया– दरअसल गोरा राजा बहुत चालाक है। वह किसी दूर देश से शायद यह मन बनाकर आया कि इस राज्य पर कब्जा कर ले। यह राज्य धन–धान्य से भरा था। प्राकृतिक सम्पदा की तो भरमार थी यहाँ। पहले इसने यहाँ के राजा से कहा कि वह चाहे तो इसकी मदद से अपने उद्योग–धन्धे लगा ले मगर उन धन्धों में राजा की हिस्सेदारी आधी होगी। इस तरह यह कर्ज देता गया। जान–बूझकर इसने यहाँ के सैनिकों में बुरी आदत डाली। उन्हें अपनी प्रजा से दूर कर दिया। प्रजा से दूर होने पर उनके लिए कोई लड़ने वाला भी न रहा। कहानी 'जादूगर' के इस प्रसंग में राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रसेवा की भावना अत्यंत प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त हुई है। कुलशील जादूगर का चरित्र यहाँ केवल एक कल्याणकारी व्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि एक सच्चे देशभक्त के रूप में उभरता है जो अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने ज्ञान, बुद्धि और साहस का उपयोग करता है।

"कुलशील ने देखा– बाहर बहुत–से सैनिक खड़े हैं। दो सैनिक अंदर घुस आए।

कुलशील समझ गया, यही मौका है। उसने हवा में हाथ लहराया तो अंदर आए दोनों सैनिकों के हाथ में एक–एक मोहर आ गई। सोने की मोहरें देखकर दोनों सैनिक खुश हो गए। बाकी सैनिकों को पता चला तो मोहरें–छीनने के लिए उनके पीछे भागे। उस दिन पहली बार गोरे सैनिकों में लड़ाई हो गई।"

कुलशील का यह कार्य राष्ट्रप्रेम का सर्वोच्च उदाहरण है क्योंकि उसने अपने व्यक्तिगत सुख या सुरक्षा की चिंता न करते हुए विदेशी सत्ता के विरुद्ध खड़ा होने का साहस दिखाया। उसने बिना हिंसा के, अपनी बुद्धिमत्ता, जादूगरी और नैतिक शक्ति के बल पर विदेशी सैनिकों में फूट डाल दी। यहाँ राष्ट्रसेवा केवल युद्ध या बलिदान के रूप में नहीं बल्कि बुद्धि, विवेक और आत्मबल के रूप में प्रस्तुत होती है। यह प्रसंग इस तथ्य को रेखांकित करता है कि सच्चा राष्ट्रप्रेम केवल भावनाओं का विषय नहीं बल्कि कर्म का मार्ग है। जब कोई व्यक्ति अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्र के हित में कार्य करता है तभी वह सच्चा देशभक्त कहलाता है। कुलशील जादूगर इस दृष्टि से एक आदर्श नायक है जो यह सिखाता है कि अपने देश की रक्षा के लिए हमें केवल हथियार नहीं बल्कि सत्य, बुद्धि और निष्ठा जैसी आंतरिक शक्तियों का भी प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार यह कथा बालकों में यह चेतना उत्पन्न करती है कि राष्ट्रप्रेम का अर्थ केवल देश से प्रेम करना नहीं बल्कि उसके गौरव, स्वतंत्रता और नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना है।

बाल साहित्य राष्ट्र प्रेम को केवल नारे या उपदेश के रूप में प्रस्तुत नहीं करता बल्कि इसे जीवन के व्यवहारिक

पक्ष से जोड़ता है। यह बालक को यह सिखाता है कि सच्चा राष्ट्र प्रेम केवल देश की जय–जयकार करने में नहीं बल्कि अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करने में है। राष्ट्र प्रेम की वास्तविक भावना तब प्रकट होती है जब व्यक्ति अपने समाज में सहयोग, समानता, सहिष्णुता और कर्तव्यनिष्ठा का पालन करता है। इस प्रकार राष्ट्र प्रेम नैतिकता और कर्तव्य–बोध से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।

कहानी 'इंजन चले साथ–साथ' में लेखिका ने राष्ट्रप्रेम की भावना को अत्यंत सहज, स्वाभाविक और बाल–सुलभ रूप में प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बच्चों द्वारा रेल के पुराने इंजन को सजाना केवल एक उत्सवधर्मी गतिविधि नहीं है बल्कि यह राष्ट्र के प्रति सम्मान, स्मृति और कृतज्ञता का प्रतीक है। पुराना इंजन यहाँ स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्र की ऐतिहासिक यात्रा और सामूहिक परिश्रम का प्रतीक बन जाता है जिसे बच्चे सजाकर अतीत के गौरव और वर्तमान की चेतना को जोड़ते हैं। कहानी के अनुसार –

तभी किसी ने शुरु किया–

'मेरा प्यारा हिंदुस्तान!''

दूसरों ने सुर मिलाया–

''देश हमारा हिंदुस्तान
जग से न्यारा हिंदुस्तान
हिंदुस्तान हिंदुस्तान।''

बच्चों के मुख से स्वतः फूट पड़ने वाला गीत "मेरा प्यारा हिंदुस्तान" राष्ट्रप्रेम की उस निर्मल भावना को व्यक्त करता है जो किसी औपचारिक उपदेश से नहीं बल्कि भावनात्मक लगाव से जन्म लेती है। यह प्रेम न तो आडंबरपूर्ण है और न ही बोझिल बल्कि उल्लास, सामूहिकता और गर्व से भरा हुआ है। गीत में 'जग से न्यारा हिंदुस्तान' कहकर देश की विशिष्टता और महानता के प्रति विश्वास प्रकट किया गया है जो राष्ट्रीय चेतना का मूल आधार है। इस कहानी में राष्ट्रप्रेम का स्वरूप भावात्मक होने के साथ–साथ सामूहिक भी है। बच्चे मिलकर इंजन सजाते हैं, मिलकर गाते हैं और मिलकर उत्सव मनाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रप्रेम व्यक्तिगत भावना न होकर सामूहिक चेतना है जो लोगों को एक सूत्र में बाँधती है। स्वतंत्रता दिवस का प्रसंग इस भावना को और अधिक सशक्त करता है क्योंकि यह दिन स्वतंत्रता, बलिदान और एकता की स्मृति से जुड़ा हुआ है।

भारतीय परंपरा में राष्ट्र प्रेम को 'भूमि पूजन' की भावना से जोड़ा गया है अर्थात अपनी मातृभूमि को माता के रूप में देखना। यह दृष्टिकोण बालक के मन में देश के प्रति श्रद्धा और भावनात्मक लगाव उत्पन्न करता है। जैसे–जैसे बालक देश के इतिहास, स्वतंत्रता–संग्राम, राष्ट्रीय नेताओं और संस्कृति के बारे में जानता है उसके भीतर राष्ट्रीय गौरव की भावना जागृत होती है। यह भाव न केवल देशभक्ति तक सीमित रहता है बल्कि बालक को अपने दायित्वों के प्रति भी सजग बनाता है ।

क्षमा शर्मा की कहानियों में गौरवशाली अतीत का स्मरण

बाल–सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में 'गौरवशाली अतीत का स्मरण' एक अत्यंत आवश्यक तत्त्व है। यह भावना बालक के भीतर अपने देश, समाज और संस्कृति के प्रति गर्व और आत्मविश्वास का भाव उत्पन्न करती है। अतीत का स्मरण केवल इतिहास की घटनाओं को दोहराना नहीं है बल्कि उन आदर्शों, मूल्यों और परंपराओं को पुनः जागृत करना है जिन्होंने राष्ट्र की आत्मा को जीवित रखा। जब बालक अपने देश के स्वर्णिम इतिहास, महान व्यक्तित्वों, सांस्कृतिक उपलब्धियों और वैज्ञानिक दृष्टि से परिचित होता है तब उसमें राष्ट्रीय गौरव का बीज अंकुरित होता है। गौरवशाली अतीत का स्मरण बालक को यह समझने में सहायता करता है कि उसका वर्तमान एक समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा की नींव पर खड़ा है।

कहानी 'बेचारी लड़की' में लेखिका ने लोककथा के माध्यम से गौरवशाली अतीत के स्मरण की भावना को अत्यंत सजीव और भावपूर्ण रूप में प्रस्तुत किया है। यह कथा केवल एक रहस्यमयी लड़की के उद्धार की कहानी नहीं है बल्कि उस समाज की स्मृति है जिसकी पहचान सामूहिक बुद्धि, मानवीय संवेदना और सांस्कृतिक परंपरा से बनी है। कहानी का परिवेश प्राचीन काल का है जहाँ माराई गुफा, ऊँची चट्टान, चरवाहों का जीवन और प्रकृति से जुड़ा समाज दिखाई देता है। यह परिवेश पाठक को अतीत की ओर ले जाता है और यह संकेत देता है कि उस समय का समाज प्रकृति के साथ सहअस्तित्व में जीता था। चरवाहों का वर्षों से उसी स्थान पर आना–जाना वहाँ बैठकर अपने सुख–दुःख साझा करना यह सब सामुदायिक जीवन और परंपरागत संस्कृति का

द्योतक है।

चट्टान पर खड़ी रहस्यमयी लड़की को देखकर गाँव वालों की प्रतिक्रिया भी गौरवशाली अतीत की भावना को उजागर करती है। वे उसे देवकन्या या परी के रूप में देखते हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि उस समाज में आस्था, कल्पना और श्रद्धा का गहरा स्थान था। किंतु इसके साथ ही उनकी चिंता लड़की को सुरक्षित नीचे उतारने की उनकी मानवीय संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व–बोध को भी दर्शाती है।

उमायलम का चरित्र इस गौरवशाली अतीत का सबसे सशक्त प्रतीक है। वह बल, भय या जबरदस्ती के स्थान पर बुद्धि, धैर्य और प्रकृति के सौंदर्य का सहारा लेता है। बाँसों से सीढ़ी बनाना और फूलों के माध्यम से लड़की को नीचे उतारना यह दिखाता है कि प्राचीन समाज समस्याओं का समाधान हिंसा नहीं विवेक और सौम्यता से करता था। फूलों का प्रयोग इस बात का प्रतीक है कि उस संस्कृति में प्रकृति केवल संसाधन नहीं बल्कि संवाद का माध्यम थी। कहानी के अनुसार–

"लड़की फूलों के पीछे नीचे उतरती गई। ये देख, गाँव वालों की खुशी का ठिकाना न रहा। वे सब उस पर फूलों की वर्षा करने लगे। उमायलम की कोई संतान नहीं थी। उसने लड़की को अपनी बेटी बना लिया। लड़की को उसने नाम दिया–का पाह शिन्यू यानी फूलों द्वारा लाई हुई लड़की।"

शिन्यू बेहद बुद्धिमान थी। गाँव वाले अपनी सारी समस्याओं के बारे में उससे राय लेते। चतुर शिन्यू पलक झपकते ही उनकी समस्याओं का समाधान कर देती। धीर–धीरे वे लोग उसे श्का सिएमश कहकर पुकारने लगे जिसका अर्थ था– 'पटरानी। लड़की का नाम 'का पाह शिन्यू' और आगे चलकर उसका 'का सिएम' बन जाना केवल व्यक्तिगत कहानी नहीं बल्कि एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपरा की उत्पत्ति का संकेत है। "शिन्यू के विवाह के बाद उसके बच्चों को भी श्सिएमश कहा गया। इन्हीं सिएम लोगों ने शिलांग में अपना पहला राज्य स्थापित किया था।" शिन्यू का बुद्धिमान होना, गाँव वालों द्वारा उससे सलाह लेना और उसके वंशजों द्वारा शिलांग में राज्य की स्थापना करना यह सब उस समाज के गौरवशाली अतीत और सांस्कृतिक गौरव को रेखांकित करता है। यह कथा वर्तमान पीढ़ी को अपने मूल, परंपरा और इतिहास से जोड़ती है।

'बेचारी लड़की' कहानी अतीत के उस समय की स्मृति कराती है जब समाज बुद्धि, करुणा, सामूहिकता और प्रकृति–सम्मान पर आधारित था। लेखिका इस लोककथा के माध्यम से पाठकों को यह बोध कराती हैं कि हमारा अतीत केवल स्मरणीय नहीं, बल्कि गौरव करने योग्य है क्योंकि उसी अतीत ने हमारी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक मूल्यों की नींव रखी है। बाल साहित्य के माध्यम से जब प्राचीन ऋषियों, स्वतंत्रता सेनानियों, वैज्ञानिकों, कवियों और समाज सुधारकों की प्रेरक गाथाएँ प्रस्तुत की जाती हैं तो वे बालक के लिए आदर्श बन जाती हैं। इन गाथाओं में केवल ऐतिहासिक घटनाएँ नहीं होतीं बल्कि उनमें निहित जीवन–मूल्य और नैतिक आदर्श बालक को सच्चे अर्थों में संस्कारित करते हैं। अतीत का यह स्मरण बालक के भीतर यह भावना जागृत करता है कि वह भी उसी परंपरा का उत्तराधिकारी है जिसे सुरक्षित रखना और आगे बढ़ाना उसका कर्तव्य है।

गौरवशाली अतीत का स्मरण बालक में आत्मविश्वास का निर्माण करता है। यह उसे यह सिखाता है कि किसी भी राष्ट्र का भविष्य तभी उज्ज्वल हो सकता है जब वह अपने इतिहास की जड़ों से जुड़ा रहे। यह स्मरण अंधानुकरण नहीं बल्कि विवेकपूर्ण आत्मस्वीकार है अर्थात् हम अपने अतीत की महान परंपराओं को स्वीकार करें, परंतु उनमें निहित सार्थक मूल्यों को ही अपनाएँ। इस प्रकार यह चेतना परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करती है। अतीत का गौरव केवल स्मरण करने के लिए नहीं है बल्कि वह वर्तमान को दिशा देने का माध्यम है। अतीत के स्मरण का उद्देश्य बालक के भीतर अतीत के प्रति श्रद्धा और वर्तमान के प्रति कर्तव्य–बोध दोनों को विकसित करना है।

क्षमा शर्मा की कहानियों में मातृभूमि का वंदन

बाल–सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में 'मातृभूमि का वंदन' अत्यंत भावनात्मक और मूल्यपरक तत्त्व है। भारतीय परंपरा में भूमि को माता के रूप में पूजने की भावना अत्यंत प्राचीन है। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' यह आदर्श वाक्य हमारे सांस्कृतिक मानस में गहराई से रचा–बसा है। मातृभूमि का वंदन केवल भूमि के प्रति भावनात्मक सम्मान नहीं है बल्कि यह अपने देश उसकी संस्कृति उसकी मिट्टी और उसमें बसने वाले लोगों के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और समर्पण का प्रतीक है।

कहानी 'पेड़ पर झण्डियाँ' में क्षमा शर्मा ने मातृभूमि के वंदन की भावना को बालमन की सहज संवेदना और

स्वाभाविक उत्साह के माध्यम से अत्यंत प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया है। बालपात्र नन्दू का चरित्र इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि उसके व्यवहार में देशभक्ति किसी औपचारिक उपदेश के रूप में नहीं बल्कि आत्मसात् किए हुए संस्कार के रूप में प्रकट होती है।

कथानक में नन्दू के ओठों से अचानक देशभक्ति गीत का फूट पड़ता है–

"हम भारत की फुलवारी के फूल बनेंगे न्यारे,
हम चमकेंगे इस धरती पर जैसे चांद सितारे।।"

गीत की पंक्तियाँ "हम भारत की फुलवारी के फूल बनेंगे न्यारे" मातृभूमि को एक सजीव, पोषक और जीवनदायिनी सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित करती हैं। यहाँ भारत को 'फुलवारी' कहकर संबोधित करना भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के अनुरूप है जहाँ देश को माँ के रूप में देखा जाता है जो अपने बच्चों को संरक्षण, संस्कार और पहचान प्रदान करती है। नन्दू का यह गीत केवल गाने का अभ्यास नहीं बल्कि मातृभूमि के प्रति कृतज्ञता और समर्पण का भावात्मक उद्घोष है। "हम चमकेंगे इस धरती पर जैसे चाँद सितारे" पंक्ति यह दर्शाती है कि बालक अपने व्यक्तिगत विकास को भी मातृभूमि की गरिमा से जोड़कर देखता है। वह यह मानता है कि उसका उज्ज्वल भविष्य देश की उन्नति से अभिन्न रूप से जुड़ा है। यही मातृभूमि के वंदन की मूल भावना है जिसमें व्यक्ति अपने अस्तित्व को राष्ट्र के व्यापक संदर्भ में स्थापित करता है।

मातृभूमि का वंदन केवल भावनात्मक आदर नहीं बल्कि कर्मयोग का प्रतीक भी है। सच्चा वंदन केवल शब्दों में नहीं बल्कि कर्मों में निहित होता है। बालक जब अपने देश की सेवा के लिए समर्पित मनोवृत्ति विकसित करता है चाहे वह पर्यावरण की रक्षा हो, सामाजिक सद्भावना हो या सांस्कृतिक संरक्षण तो वही मातृभूमि के प्रति सच्ची श्रद्धा का परिचायक बनता है। इस दृष्टि से मातृभूमि का वंदन आत्मानुशासन, परिश्रम और नैतिक उत्तरदायित्व का शिक्षण भी है।

कहानी 'बुर्ज में मोहरें' के माध्यम से लेखिका ने मातृभूमि के प्रति गहन लगाव, श्रद्धा और वंदना की भावना को अत्यंत संवेदनशील ढंग से अभिव्यक्त किया है। रामप्रसाद का अपने परिवार के साथ विवशतावश गाँव छोड़ना केवल भौगोलिक स्थान से अलग होना नहीं है बल्कि अपनी जड़ों, अपनी पहचान और अपनी मातृभूमि से क्षणिक विरह का दारुण अनुभव है। जाते समय उसका अपने खेतों को नमस्कार करना और 'धरती मैया' से क्षमा माँगना भारतीय संस्कृति में भूमि को माता के रूप में देखने की उस परंपरा का सशक्त प्रतीक है जहाँ धरती केवल आजीविका का साधन नहीं बल्कि जीवनदायिनी और पालनकर्त्री मानी जाती है।

जाते–जाते अपने खेतों को नमस्कार करता हुआ बोला– "धरती मैया, माफ करना। जिंदा रहा तो तुम्हारी गोद में जरूर वापस आऊँगा। मैं जानता हूँ कि शानसिंह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तुम तो लोगों के अत्याचार का बदला उपकार करके ही देती हो।" गाँव की सीमा खत्म होते–होते रामप्रसाद की आँखें भर आई।

रामप्रसाद का यह विश्वास कि धरती मैया अत्याचार का उत्तर उपकार से देती है। यह कथन मातृभूमि के प्रति उसकी अटूट आस्था को प्रकट करता है। यहाँ धरती को सहनशील, करुणामयी और न्यायकारी शक्ति के रूप में देखा गया है जो मनुष्य के दुर्व्यवहार के बावजूद उसे पोषण और संरक्षण देती रहती है। यह दृष्टि मातृभूमि के वंदनीय स्वरूप को उजागर करती है जहाँ प्रेम, क्षमा और आश्रय की भावना निहित है। गाँव की सीमा पार करते समय रामप्रसाद की आँखों का भर आना इस बात का संकेत है कि मातृभूमि से बिछुड़ना उसके लिए पीड़ा और भावनात्मक आघात से कम नहीं है। यह दृश्य पाठक के मन में भी उस आत्मीय संबंध की अनुभूति कराता है जो व्यक्ति और उसकी जन्मभूमि के बीच होता है।

इस प्रकार यह कथानक मातृभूमि की वंदना का सशक्त संदेश देता है। लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि सच्चा देशप्रेम केवल नारों या घोषणाओं में नहीं बल्कि उस भावनात्मक जुड़ाव में निहित है जहाँ व्यक्ति अपनी भूमि को माँ के समान सम्मान देता है और उससे पुनर्मिलन की आकांक्षा अपने हृदय में संजोए रखता है।

अतः मातृभूमि का वंदन बाल–सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना का गहरा मानवीय आयाम है। यह न केवल बालक के हृदय में देशभक्ति का भाव जगाता है बल्कि उसे कर्तव्यनिष्ठ, संवेदनशील और समर्पित नागरिक बनने की दिशा में भी प्रेरित करता है। मातृभूमि का यह वंदन अंततः आत्मगौरव, सामाजिक एकता और राष्ट्रीय उत्थान का सशक्त माध्यम बनकर उभरता है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ–

1. सिंह, सुधीर कुमार, बाल साहित्य और मूल्य शिक्षा, पृ. 65
2. त्रिपाठी, शैलजा, भारतीय बाल साहित्य की प्रवृत्तियाँ, पृ. 118
3. शुक्ल, हेमंत कुमार, बाल साहित्य और राष्ट्रीय चेतना, पृ. 72
4. शर्मा, क्षमा, इक्यावन बाल कहानियां, जादूगर, पृ. 63
5. शर्मा, क्षमा, इक्यावन बाल कहानियां, जादूगर, पृ. 64
6. शर्मा, क्षमा, इंजन चले साथ–साथ, पृ. 09
7. शर्मा, क्षमा, इक्यावन बाल कहानियां, बेचारी लड़की, पृ. 169
8. शर्मा, क्षमा, इक्यावन बाल कहानियां, बेचारी लड़की, पृ. 169
9. शर्मा, क्षमा, इक्यावन बाल कहानियां, पेड़ पर झंडियाँ, पृ. 64
10. शर्मा, क्षमा, इक्यावन बाल कहानियां, बुर्ज में मोहरें, पृ. 99

Cite this Article-

'विकास कुमार', 'क्षमा शर्मा की बाल कहानियों में राष्ट्रीय चेतना' Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:01, January 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i10012

Published Date- 10 January 2025